- सुखाई गई बालियों को नमी रहित पात्रों में भंडारण किया जाता है।
- इन्हें 3.0 से 5.0 सेमी लंबे छोटे टुकड़ों में काटा और सुखाया जाता है।
- औसतन प्रति हेक्टेयर में लगभग 500 किलो जड़ें प्राप्त होती हैं।

छंटाई :

- तने और जड़ों को सुखाए हुए मोटे भागों को पीपलामूल कहा जाता है।
- पिप्पलामूल की तीन श्रेणियां होती हैं।

पैदावार :

- पहले साल में सूखे फलों की उपज लगभग 100–150 किलो/हेक्टेयर होती है और तीसरे से चौथे साल में 0.75–1.0 टन/हेक्टेयर हो जाती है।
- पहले साल के दौरान सूखी बालियों की उपज लगभग 0.5 टन/हेक्टेयर होती है।
- तीसरे साल में यह बढ़कर 1.2 टन/हेक्टेयर तक हो जाती है। तीसरे साल के बाद लताएं कम उत्पादक हो जाती हैं और इन्हें पुनः रोपा जाना चाहिए।
- जड़ों की औसत उपज 0.5 टन/हेक्टेयर है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार
तृतीय तल, आयुष भवन, बी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | फैक्स : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | वेबसाइट : www.nmpb.nic.in

नोट: कृषि प्राद्योगिकी का विकास, औषधीय एवं सुगंधित पादप अनुसंधान निदेशालय (पहले राष्ट्रीय औषधीय एवं सुगंधित पादप अनुसंधान केंद्र), डीएमएपीआर, आणंद, गुजरात द्वारा किया गया है।

पिप्पली की खेती

सामान्य नाम	:	पिप्पली
वानस्पतिक नाम	:	पाइपर लोंगम
कुल	:	पाइपेरेयेसी
उपयोगी भाग	:	सुखाई गई नोकें और जड़ें
सामान्य उपयोग	:	पौधे की जड़ आयुर्वेद में वातहर, लिवर टॉनिक, पेट के रोगों में किया जाता है। इसके फल लिवर की जलन, जोड़ों में दर्द, सर्पदंश, बिच्छू के काटने और रतौंधी में लाभकारी हैं।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

पिप्पली

पाइपर लोंगम
कुल–पाइपेरेयेसी

इस पौधे को उचित बढ़त के लिए सहारे की जरूरत होती है।

जलवायु और मिट्टी :

- इस पौधे को गर्म, नमी वाली जलवायु की जरूरत होती है।
- बेहतर बढ़त के लिए इसे आंशिक छाया की जरूरत होती है।
- यह मिश्रित किस्म की मिट्टी में अच्छी तरह फलती–फूलती है।
- उच्च जैविक पदार्थयुक्त, जल धारण क्षमता तथा अच्छी निकासी वाली उपजाऊ काली दोमट मिट्टी में इसकी खेती सफलतापूर्वक की जाती है।

उगाने की सामग्री :

- वर्षा ऋतु की शुरूआत में तनों/शिराओं की कटाई के माध्यम से इसे उगाया जाता है।
- हालांकि, 3–5 आंतरिक गांठों वाले एक साल पुराने तनों की कटिंग के माध्यम से इसे आसानी से उगाया जा सकता है।
- कटिंग को सामान्य मिट्टी से भरे हुए पालीथिन बैगों में लगाया जा सकता है। नर्सरी को मार्च और अप्रैल के दौरान तैयार किया जा सकता है।

नर्सरी विधि

पौध उगानाः

- तनों/शिराओं को मानसून की वर्षा आरंभ होने के तुरंत बाद रोपा जा सकता है।
- जड़ों पर मीली बग के हमले से बचाने के लिए नर्सरी उगाने का सही समय मार्च और अप्रैल के दौरान होता है, मिट्टी के मिश्रण के साथ 10% डीपी मिलाया जाना है।

पौधों को रोपनाः

- 3.0 X 2.5 मी. की क्यारियां तैयार की जाती हैं और 60 X 60 सेमी की दूरी पर गड्ढे खोदे जाते हैं तथा गोबर की खाद 100 ग्राम/गड्ढे की दर से मिट्टी के साथ मिलाई जाती है।
- दो जड़ों वाली कटिंग या जड़ों वाले तनों को हर गड्ढे में रोपा जाता है।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और खाद का प्रयोग :

- 2–3 बार जुताई और उसके बाद निराई और गुड़ाई की जरूरत होती है।
- पीपली को काफी खाद की जरूरत होती है। कम उपजाऊ भूमि में, पौधे की बढ़त बहुत कमजोर होती है।
- तैयारी करते समय लगभग 20 टन/हेक्टेयर उर्वरक या अन्य जैविक खाद डाली जाती है।
- बाद के वर्षों में भी मानसून के आने से पहले उर्वरक या अन्य जैविक खाद डालनी होती है।

संवर्धन विधि :

- जरूरत पड़ने पर निराई आवश्यक होती है।
- आम तौर पर दो से तीन निराई काफी है।
- नारियल, सुहाबुल इत्यादि के साथ इसकी खेती की जा सकती है।

सिंचाई विधियां :

- गर्मी के महीनों में सिंचाई अत्यंत आवश्यक है।
- भूमि की जल धारण क्षमता और मौसम के अनुसार एक सप्ताह में एक या दो बार सिंचाई की जानी चाहिए।
- सिंचाई की गई फसल में, गर्मी के महीनों में भी फल लगने जारी रहते हैं।

कीट और बीमारियां :

- फाइटोप्थोरा पत्ती, तने की सड़न और एंथ्रेक्नोस पीपली की महत्वपूर्ण बीमारियां हैं।
- 15 दिनों के अंतराल पर 0.5% बोर्डेक्स मिश्रण के छिड़काव और मासिक अंतराल पर 1.0% बोर्डेक्स मिश्रण से भूमि की उपचार इन बीमारियों से होने वाले नुकसान को कम करती है।
- 0.25% नीम के बीजों की गिरी या नीम आधारित किसी अन्य कीटनाशक का छिड़काव कोमल पत्तियों और कलियों को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों पर प्रभावी तौर पर नियंत्रण करता है।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाई :

- इसकी लताएं रोपण के छह महीने के बाद फूलने लगती हैं।
- इसके फलों को पकने में दो महीने का समय लगता है।
- पूरी तरह से परिपक्व फल, पकने से पहले तोड़े जाते हैं जब ये पके और काले हरे रंग के हो जाते हैं।
- अधिक परिपक्व और पके हुए फलों से उपज की गुणवत्ता घटती है और ये पूरी तरह सूखने के बाद आसानी से नहीं टूटते।
- पहले साल में सूखे फलों की उपज लगभग 100–150 किलो/हेक्टेयर होती है और तीसरे से चौथे साल में 0.75–1.0 टन/हेक्टेयर हो जाती है।
- उसके बाद, उपज घटने लगती है और धीरे–धीरे पांचवें साल के बाद अनार्थिक हो जाती है।
- आमतौर पर 4 से 5 वर्षीय फसल के तौर पर इसकी खेती की जाती है।

फसल पश्चात प्रबंधन :

- कटी हुई बालियों को धूप में 4 से 5 दिन तक सुखाया जाता है जब तक वे पूरी तरह न सूख जायें।